Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN:3048-5991,
Journal home page: https://integralresearch.in/ Vol. 01, No. 05, July. 2024

प्राचीन आर्यावर्त मे मौक्तिक शिल्प

डॉ रीना चिकारा *
सहायक **आचार्य**
कनोहरलाल स्नात्तकोतर महिला महाविद्यलय, मेरठ

डॉ दीपक सिंह
सहायक **आचार्य**
स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, शाहजहाँपुर

साराशं

भारत से विदेशों को भेजी जाने वाली सबसे मूल्यवान वस्तु मोती थे। प्राचीन भारत मे मोती के लिये मुक्ता शब्द का प्रयोग मिलता है। प्राचीन भारत मे मुक्ता उद्योग महत्वपूर्ण उद्योग था। भारत के समुंद्र और नदियों मे प्रचुर मात्रा मे मोती मिलते थे। प्लिनी ने भारत को मुक्ताओं का भंडार कहा है। प्राचीन भारत मे मुक्ता उद्योग महत्वपूर्ण उद्योग था। भारत के समुंद्र और नदियों मे प्रचुर मात्रा मे मोती मिलते थे। प्लिनी ने भारत को मुक्ताओं का भंडार कहा है। मोती का र्स्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद मे हुआ है। गरूड पुराण मे सिंहल,परलोक, सौराष्ट्र, ताम्रवर्ण, पारशव, कुबेर, पाण्डय, हाटक और हेमक को मुक्ताओं का खजाना बताया है। मौर्यत्तर काल मे तो मुक्ता उद्योग ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी। अथर्ववेद, वैजयन्ती कोश, अग्निपुराण तथा गरूढ़ पुराण, अमरकोश, वृहत्सहिंता, रघुवंश, शिल्पादिकारम्, अर्थशास्त्र, तंजौर अभिलेख।

संकेत शब्द –आर्यावर्तए मुट्टु, मुक्ता, जीमूत, सीपी, शुक्ति और शंख, खन्याध्यक्ष, ताम्रपर्णिक, चौर्णय, स्रोतसीय, निस्तल, प्रकाण्ड।

प्राचीन आर्यावर्त में मौक्तिक शिल्प (pearl crafting) एक महत्वपूर्ण कला रूप था जो न केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है बल्कि यह देश की समृद्धि और व्यापारिक सम्बन्धों का भी प्रमाण है। मौक्तिक शिल्प में मोतियों का उपयोग कर विभिन्न आभूषणों और सजावटी वस्तुओं का निर्माण किया जाता था।

मोती एक प्रसिद्ध रत्न है जो समुंद्र में अथवा रेतीले तटों के पास सीपी मे से निकलता है।1 वर्तमान में सामान्य भाषा मे इसे मोती कहा जाता है। मोती या 'मुक्ता' एक कठोर पदार्थ है जो मुलायम ऊतकों वाले जीवों द्वारा पैदा किया जता है। रासायनिक रूप से मोती सूक्ष्म क्रिटलीय रूप में कैल्सियम कार्बोनेट है जो जीवों द्वारा संकेन्द्रीय स्तरों (concentric layers) में निक्षेप (डिपॉजिट) करके बनाया जाता है। आदर्श मोती उसे मानते हैं जो पूर्णतः गोल और चिकना हो, किन्तु अन्य आकार के मोती भी पाये जाते हैं। अच्छी गुणवत्ता वाले प्राकृतिक मोती प्राचीन काल से ही बहुत मूल्यवान रहे हैं।2 प्राचीन भारत मे मुक्ता उद्योग महत्वपूर्ण उद्योग था। भारत के समुंद्र और नदियों मे प्रचुर मात्रा मे मोती मिलते थे। प्लिनी ने भारत को मुक्ताओं का भंडार कहा है।3 मोती का र्स्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद मे हुआ है। ऋग्वेद मे मुक्ता को 'कृशन' कहा गया है।4 अथर्ववेद में मोती पैदा करने वाले शंख का उल्लेख है जो समुद्र से लाये जाते थे।5 अमरकोश मे मौक्तिक और मोती नाम मिलते हैं।6 वैजयन्ती कोश मे भी मोती के कई नाम मिलते हैं।7 अग्निपुराण तथा गरूढ़पुराण8 मे मोती को मुक्ता कहा गया है। तमिलनाडु के तंजौर अभिलेख मे मोती का मुट्टु नाम मिलता है9।

* Corresponding Author: **डॉ रीना चिकारा**
E-mail: vishendeepaksingh@gmail.com
Received 12 July 2024; Accepted 18 July 2024. Available online: 30 July 2024.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

मौक्तिक समुंद्र मे मिलने वाले शंख तथा सीपी से निकाले जाते थे। कौटिल्य ने शुक्ति और शंख को मोती की योनी (मूलस्थान) कहा है।10 गरूढ़पुराण मे श्रेष्ठ हाथी जीमूत (मेघ), वराह, मत्स्य, सप, शुक्ति(सीपी), तथा बाँस में उत्पन्न मुक्ताओं का उल्लेख मिलता है किन्तु शुक्ति से उत्पन्न मोती को अधिक उपलब्ध और श्रेष्ठ मानी गई है।11 गरूड पुराण में उल्लेख मिलता है कि शुक्ति से उत्पन्न मुक्ता को ही रत्नपद प्राप्त है तथा अन्य माध्यम उत्पन्न मुक्ता प्रभावहीन मानी गई है।12 वराहमिहिर ने भी मुक्ता उत्पति के आठ स्रोत बताए हैं – हाथी, सर्प, शुक्ति, शंख, बादल, बाँस, मछली तथा सुअर।13 कौटिल्य ने भी मुक्ता उत्पति के यही आठ स्रोत बताए है।14 इन सभी स्रोतो में सीपी मुक्ता प्राप्त करने का सबसे अधिक सुलभ स्रोत है।

गरूड पुराण मे सिंहल,परलोक, सौराष्ट्र, ताम्रवर्ण, पारशव, कुबेर, पाण्डय, हाटक और हेमक को मुक्ताओं का खजाना बताया है।15 वृहत्सहिंता के अनुसार ताम्रपर्णी नदी का मुहाना, पाण्डय राज्य, सुराष्ट्र, हिमालय क्षेत्र और श्री लंका मुक्ता उत्पादन के महत्वपूर्ण स्थल थे।16 अर्थशास्त्र में भी ताम्रपर्णी नदी, पाण्डय राज्य, हिमालय क्षेत्र, सिंहल द्वीप, केरल देश की चुर्ण नदी, महेन्द्र पर्वत को मुक्ता उत्पादन के महत्वपूर्ण स्थल बताये हैं।17 मुक्ता प्राप्ति के मुख्य क्षेत्र दक्षिण भारत मे समुंद्र व नदियां थी। तमिलनाडु में ताम्रपर्णी नदी का मुहाना बहुत प्रचीन काल से ही मोती के लिये प्रसिद्ध था। पेरिप्लस18 ने भी ताम्रपर्णी19 नदी के निकट कौरके को मुक्ता उत्पादन का प्रसिद्ध केन्द्र बताया है। रघुवंश, अग्नि पुराण, गरूड पुराण, अर्थशास्त्र तथा वृहत्सहिंता में थी ताम्रपर्णी नदी को मुक्ता उत्पादन का महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उल्लेख हुआ है।20 यह क्षेत्र पाण्डय राज्य मे पडता था। दुसरा महत्वपुर्ण केन्द्र मन्नार की खाडी तथा पाक जलडमरूमध्य था।21 पेरिप्लस के अनुसार इन क्षेत्रों पर राज्य का एकाधिकार था। मन्नार की खाडी के मोती अपराधियों से निकलवाये जाते थे और इन स्थानों की सारी उपज राजधानी में लायी जाती थी।22 चौथा केन्द्र बंगाल था। यहां के समुंद्र से भी मोती निकाले जाते थे।23 प्लिनी ने पेरीमूला नामक स्थान को भी मुक्ता उत्पादन का केन्द्र बताया है। इसकी पहचान मुम्बई के निकट चोल नामक स्थान से की गई है। इसका पुराना नाम 'सैमिल्ला' था।24 वृहत्सहिंता मे सौराष्ट्र को मुक्ता उत्पादन का केन्द्र बताया है।25 मदुरा मुक्ता उद्योग और व्यापार का सबसे बडा केन्द्र था।26

मौर्य काल मे मुक्ता उद्योग पर राज्य का एकाधिकार था। माती निकालने कार्य 'खन्याध्यक्ष' के अधीन था। मुक्ता को समुंद्र से निकाल कर उसे साफ करने तथा उनसे वस्तुएं बनाने के लिये कर्मान्त भी नियुक्त किये जाते थे।27 मौर्यत्तर काल मे तो मुक्ता उद्योग ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी। गुप्त काल में तमिल में मोती का व्यापार बहुत उन्नत था। यहां उरेयूर एवं कौल्के भी उद्योग एवं व्यापार के महत्वपूर्ण केन्द्र थे।28 चोल राज्य का अरगरु भी मोतियों के लिये प्रसिद्ध था।29 शिल्पादिकारम् में उल्लेख है कि कावेरीपट्टनम या पुहार की गलियों में माती की दुकाने थी।30 कुवलयमाला तथा कादम्बरी के अनुसार उज्जयनी नगर के बाजार मुक्ताओं से भरपूर थे।31

प्राचीन भारतीय साहित्य मे मुक्ताओं के प्रकार, रंग, गुणदोष, परिक्षण विधि तथा शुद्ध करने की विधि का उल्लेख मिलते हैं। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र32 में मुक्ता प्राप्ति स्थान के आधार पर बहुत से भेद बताए हैं–

1ण ताम्रपर्णिक (ताम्रपर्णी नदी से प्राप्त मुक्ता) रू. ये मोती ताम्रपर्णी नदी से प्राप्त होते थे। इनकी गुणवत्ता और रंग की विशेषताएँ नदी की विशेषता पर निर्भर करती थीं।

2ण पाण्डयकवाटक (पाण्डय देश से प्राप्त मुक्ता)रू. ये मोती पाण्ड्य देश से प्राप्त होते थे, जो दक्षिण भारत में स्थित था। पाण्ड्य क्षेत्र के मोती की गुणवत्ता और रंग की विशेषताएँ इस क्षेत्र की मिट्टी और जलवायु पर निर्भर होती थीं।

3ण पारिक्य (पाश नामक नदी से प्राप्त मुक्ता)रू. ये मोती पाश नदी से प्राप्त होते थे। पारिक्य मोतियों की विशिष्टता नदी के पानी की स्थिति और उनके प्राकृतिक गुणों पर आधारित होती थी।

4ण कोलय (सिंहलद्वीप की कुल नदी से प्राप्त मुक्ता)रू. ये मोती श्रीलंका (सिंहलद्वीप) की नदियों से प्राप्त होते थे। श्रीलंका के मोती की चमक और गुणवत्ता को उच्च मान्यता प्राप्त थी।

5ण चौर्णय (केरल देश की चूर्णनदी से प्राप्त मुक्ता)रू. ये मोती केरल की चूर्णनदी से प्राप्त होते थे। केरल के मोती की विशिष्टता स्थानीय जलवायु और मिट्टी की विशेषताओं पर निर्भर करती थी।

6ण माहेन्द्र (माहेन्द्र पर्वत से प्राप्त मुक्ता)रू. ये मोती माहेन्द्र पर्वत से प्राप्त होते थे। पर्वतीय क्षेत्रों के मोती की विशेषताएँ उस क्षेत्र की भौगोलिक और पर्यावरणीय स्थितियों से जुड़ी होती थीं।

7ण कार्दमिक (पारसीक देश की कर्दम नदी से प्राप्त मुक्ता)रू. ये मोती पारसीक देश की कर्दम नदी से प्राप्त होते थे। इन मोतियों की गुणवत्ता और रंग नदी के जल की विशेषताओं पर निर्भर करते थे।

8ण स्रोतसीय (बर्वर समुद्र में गिरने वाली स्रोतकीय नदी से प्राप्त मुक्ता)रू. ये मोती बर्वर समुद्र की स्रोतकीय नदी से प्राप्त होते थे। समुद्र तटीय मोतियों की गुणवत्ता समुद्र के जल के स्वच्छता और खनिजों पर निर्भर होती थी।

9ण ह्यादीय (बर्वर समुद्र के समीप श्रीघंट नामक नदी से प्राप्त मुक्ता)रू.ये मोती बर्वर समुद्र के समीप स्थित श्रीघंट नदी से प्राप्त होते थे। इनकी विशिष्टता नदी की विशेषताओं और समुद्री जल की स्थिति पर आधारित होती थी।

10ण हेमवत (हिमालय से प्राप्त मुक्ता)रू. ये मोती हिमालय पर्वत से प्राप्त होते थे। हिमालय के मोती की चमक और गुणवत्ता क्षेत्र की ठंडक और उच्च ऊंचाई की जलवायु से प्रभावित होती थी।

कौटिल्य के अनुसार मोती प्रशस्त (उत्तम, गुणसम्पन्न) तथा अप्रशस्त होते है। स्थूल (मोटे), वृत्त (गोल), निस्तल (तलविहिन), श्वेत, गुरु (भारी), भ्रजिष्णु (चमकीले), स्निग्ध (चिकने), देशविष्ठ (ठीक स्थान पर जिसमे छेद किया जा सके) मोतियों को कौटिल्य ने प्रशस्त माना है।33 गरूडपुराण में भी श्वेत, गुरु, स्निग्ध, निर्मल, तेजसम्पन्न, सुन्दर, एवं वृत्ताकार को प्रशस्त मुक्ता माना है।34 गरूडपुराण और अग्निनुराण मे मुक्ता के उत्पति स्थान के आधार पर उसके रंग और गुण का विस्तृत वर्णन किया है – "शंख से उत्पन्न मुक्ता शंख के वर्ण वाली होती है। गज (हाथी) से उत्पन्न मुक्ता पीत वर्ण और प्रभावहीन होती है। इन्हे गज मुक्ता कहते है। मत्स्य से उत्पन्न मुक्ता मत्स्य के पीठ के समान वर्ण वाली, अत्यंत सुन्दर, व्रत्ताकार, लघु एवं अत्यधिक सुक्ष्म होती है। यह जलचर प्रणियों के मुखों से उत्पन्न होती है। वराह के दांत से उत्पन्न मुक्ता उसके दांत के के समान रंग वाली होती है। बांस पर्वो से उत्पन्न मुक्ताऐं ओले के समान उज्जवल वर्ण की होती हैं। सर्प से उत्पन्न मुक्ता मत्स्य मुक्ता के समान विशुद्ध और वृत्ताकार होती है। यह सर्पो के सिर से प्राप्त होती है। सह मुक्ता बहुत शुभ होती है। शुक्ति(सीपी) से प्राप्त मुक्ता सब प्रकार की आकृतियों की होती है तथा गुण सम्पन्न होती है।"35 तमिलनाडु के तंजौर मंदिर अभिलेख(राजराजा प्रथम)36 में मातियो का विस्तृत वर्णन है – गोल मोती(वट्टम), बेलनाकार मोती(अनुवट्टम), पॉलिश किया हुआ मोती(अप्पुमुट्टु), छोटा मोती(कुरूमुट्टु), निम्बोलम, पायीटम आदि।

मोती का प्रयोग आभुषण बनाने मे किया जाता था। मोती के मुख्यतः हार बनाये जाते थे। अर्थशास्त्र में मुक्तायष्ठियों(मोतीयों के हार) के नाम दिये गये है – शीर्षक(समान आकार के मातियों की माला जिसके मध्य मे एक बडा मोती), उपशीर्षाक(शीर्षक जैसी माला किन्तु मध्य मे पांच बडे मोती), प्रकाण्ड(बीच मे दो बडे मोती तथा दोनो ओर क्रमानुसार मोती का आकार घटता जाता है), अवघटक(एक समान मोतियों की माला), तरल प्रतिबन्ध(जिस माला के मध्य मे एक बडा चमकीला मोती हो)37 मोतियों की माला एक से लेकर हजार लडियों की होती थी – एकावली(एक लडी), अर्थमाणवक(10 लडी), माणवक(20 लडी), नक्षत्रमाला(27 लडी)38 सोने के आभुषणों मे मोती लगाये जाते थे।39

भारत से विदेशों को भेजी जाने वाली सबसे मूल्यवान वस्तु मोती थे। मुजरिस और लकिंडा के बन्दरगाहों से अच्छी किस्म के मातियों का निर्यात होता था। कौरके बन्दरगाह भी मोती के व्यापार के लिये प्रसिद्ध था।40 गंगा के मुहाने पर स्थित गंगेज से भी मोतियों का निर्यात होता था।41 मोती का निर्यात मुख्यतः ईरान, अरब तथा रोम जैसे देशों को होता था। ई0 की पहली शताब्दी में रोम भारत के मोती का सबसे बडा निर्यातक देश था। प्लिनी के अनुसार रोम में मोतियों का प्रयोग सम्राट आगस्टस द्वारा सिकन्दरिया जीतने के बाद आरम्भ हुआ।42 जस्टिनियन ने अपनी कानुन सहिंता में(छठी शताब्दी ई0) आयात कर के संबंध मे उन वस्तुओं के नाम दिए है जो भारत से आते थे, उनमे मोती का भी नाम है।43 रोम

मे मोतियों की मांग पाण्डय तथा चोल राज्यों के समुंद्र तटों से निकलने वाले मातियों से पूरी की जाती थी। मोती यद्यपि ईरान की खाडी से भी निकाले जाते थे किन्तु भारतीय मोती इनसे श्रेष्ठ माने जाते थे।44 श्री लंका से मोती का आयात होता था। इसे रत्नद्वीप कहा जाता था।45 मेगस्थनीज के अनुसार श्रीलंका में भारत से अधिक मोती मिलते थे।46 वृहत्सहिंता, गरूड पुराण, अग्नि पुराण, अर्थशास्त्र में भी सिंहल के मोतियों का उल्लेख हुआ है।47 फहियान के अनुसार श्री लंका में शुद्ध और चमकीले मुक्ता निकलते थे।48

प्राचीन साहित्य, अभिलेखो और पुरातात्विक स्रोतों के आधार पर स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में मोती उद्योग एवं व्यापार बहुत उन्नत था। विदेशो में भारतीय मोती श्रेष्ठ माना जाता था और बडी मात्रा में मोती का निर्यात होता था।

वर्तमान में भारत में यह कच्छ की खाड़ी (गुजरात के तट) और मन्नार की खाड़ी (तमिलनाडु के तट से दूर) में मोती का उत्पादन होता है।

भारत से विदेशों को भेजी जाने वाली सबसे मूल्यवान वस्तु मोती थे। प्रमुख निर्यात स्थलों में मुजरिस और लकिंडा बंदरगाह शामिल थे। गंगा के मुहाने पर स्थित गंगेज से भी मोती का निर्यात होता था। रोम, ईरान, और अरब जैसे देशों में भारत के मोती की भारी मांग थी। पहली शताब्दी ईस्वी में रोम भारत के मोती का सबसे बड़ा निर्यातक था। प्लिनी के अनुसार, रोम में मोतियों का उपयोग सम्राट आगस्टस के समय से शुरू हुआ था। छठी शताब्दी में जस्टिनियन ने अपनी कानूनी संहिता में भारत से आयातित वस्तुओं की सूची में मोती का उल्लेख किया। भारतीय मोती की गुणवत्ता को ईरान की खाड़ी से प्राप्त मोतियों से श्रेष्ठ माना जाता था। श्रीलंका, जिसे रत्नद्वीप भी कहा जाता था, से भी मोती का आयात होता था और वहां के मोती की भी उच्च गुणवत्ता की मान्यता थी। फहियान और प्राचीन ग्रंथों में श्रीलंका के मोतियों की चमक और शुद्धता का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार, भारत और श्रीलंका के मोती उस समय के महत्वपूर्ण व्यापारिक वस्त्र थे और वैश्विक व्यापार में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

संदर्भ ग्रंथ:

1.हिन्द शब्द सागर–संपादक श्यामसुंदर दास, वाराणसी, 1971 भाग 8, पृ0 3954, 4031

2. https://hi.wikipedia.org/wiki/मोती

3 हरिदत्त वेदालंकार, प्रचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, इलाहबाद, 1973, पृ0 526

4. ऋग्वेद, 1.47.6, 7.6.7,

5 अथर्वेद, 4.10.1–3,1

6 अमरकोश, अमरसिंह, क्षीर स्वामी की टीका सहित, पुना, 1907, 2.92, पृ0 214

7 वैजयन्ती कोशः, श्री यादव प्रकाश कृत, सं0 पं0 हरगोविन्द शास्त्री, वाराणसी, 6.2.29

8 अग्नि पुराण, अनुवादक तारिणीश झा, इलाहबाद, 1976, अध्याय अ0 245, 12–15, गरूड पुराण, सर्ग 69

9 साउथ इंडियन इंस्क्रप्शन, एच. कृष्ण शास्त्री, भाग–2, न0 3

10 अर्थशास्त्र, कौटिल्य कृत, अनुवाद वाचस्पति गैरोला, वाराणसी, 2005, 2.11

11. गरूड पुराण, सर्ग 69

12. गरूड पुराण, सर्ग 69

13. शास्त्री, इंडिया ऐज सीन इन वृहत्सहिंता, पृ0 336

14. अर्थशास्त्र, 2.11

15. गरूड पुराण, सर्ग 69

16. शास्त्री, वही, प10 336

17 अर्थशास्त्र, 2.11

18 पेरिप्लस ऑफ इरिथियन सी, संपादक, डब्ल्यू. एच. शॉफ, लंदन, 1912, पृ0 45

19 कालिदास ग्रन्थावली, सीताराम चतुर्वेदी, अलीगढख पृ0 152। दक्षिण भारत मे मद्रास प्रान्त के तिन्नेवली जिले में एक नदी है जो पश्चिम घाट से निकल कर बंगाल की खाडी में गिरती है।

20 रघुवंश, अनुवाद सीताराम चतुर्वेदी, सर्ग 4.50। अग्निपुराण, अ0 69, अर्भशास्त्र, 2/11, शास्त्री, पूर्वोद्धृत, पृ0 336, गरुडपुराण, 69

21 पेरिप्लस, पूर्वोद्धृत, पृ0 45,46

22 वही, पृ0 45,46, मन्नार की खाडी वर्तमान में भी मुक्ता उत्पादनका महत्वपूर्ण केन्द्र है।

23 वही, पृ0 45,46

24 हरिदत्त वेदालंकार, पूर्वोद्धृत, पृ0 528

25. शास्त्री, पूर्वोद्धृत, पृ0 336, वर्तमान गुजरात। यहां कच्छ की खाडी मे आज भी मोती निकाले जाते है।

26 श्याम मनोहर मिश्र, प्रचीन भारत मे आर्थिक केन्द्र, इलाहबाद, 1997, पृ0 290। मदूरा चैन्नई से लगभग 550 कि.मी. दूर दक्षिण मे बैगाई नदी के किनारे स्थित है।

27 अर्थशास्त्र, 2/11

28 श्याम मनोहर मिश्र, वही, पृ0 290

29 वही, पृ0 290

30 शिल्पादिकारम, अनुवाद, रामचन्द्र दीक्षित, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटि, पृ0 92, 110–115.

31. शास्त्री, पूर्वोद्धृत, कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, व्याख्याकार नर्मदेश्वर कुमार त्रिपाठी, बाराणसी, 2005, पृ0 163.

32. अर्थशास्त्र, 2/11

33. वही

34. गरुडपुराण, अ0 69

35. वही, अग्निपुराण, अ0 245, 12–15

36. साउथ इडियन इंस्क्रप्शन, एच. कृष्ण शास्त्री, भाग–2, न0 3

37. अर्थशास्त्र, 2/11

38. वही

39. ओमप्रकाश, प्रचीन भारत का आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास, नई दिल्ली, 2001 पृ0 293

40. हरिदत्त वेदालंकार, पूर्वोद्धृत, पृ0437

41. वही

42. वही

43. ओमप्रकाश, पूर्वोद्धृत, पृ0 558

44. हरिदत्त वेदालंकार, पूर्वोद्धृत, पृ0437

45. समराइच्छकहा

46 johan w. McCrindle, Ancient India as described by Megasthenes and Arrian, London, 1877, Pg. 60

47. गरुडपुराण, अ0 69, अर्थशास्त्र, 2/11, अग्नि पुराण, अध्याय 299

48. चीनी यात्री फाहियान का यात्रा विवरण, अनुवाद जगमोहन वर्मा, पृ0 9.